

झाँसी नगर के विशेष संदर्भ में ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के शैक्षणिक प्रदर्शन पर माता-पिता की सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. प्रतिभा खरे

सहायक आचार्य

शिक्षा संस्थान, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी

pratibhakhare793@gmail.com

अमूर्त

यह शोध पत्र झाँसी और आस-पास के क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में नामांकित ग्रामीण तथा शहरी छात्रों के शैक्षणिक निष्पादन पर माता-पिता की सामाजिक-आर्थिक स्थिति (Socio-Economic Status - SES) के प्रभाव का तुलनात्मक विश्लेषण करता है। भारत में, शिक्षा के परिणाम भौगोलिक और सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के आधार पर असमान रहे हैं, और बुन्देलखण्ड क्षेत्र (जिसमें झाँसी स्थित है) इस विभाजन को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। इस अध्ययन का प्राथमिक उद्देश्य यह निर्धारित करना था कि क्या शैक्षणिक निष्पादन में ग्रामीण-शहरी अंतर मौजूद है और क्या माता-पिता की SES के विभिन्न घटक (आय, शिक्षा और व्यवसाय) इन दोनों समूहों पर अलग-अलग ढंग से प्रभाव डालते हैं। इस **मात्रात्मक तुलनात्मक** अध्ययन में झाँसी शहर के चार शहरी विद्यालयों और तीन निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालयों से कक्षा 9वीं से 12वीं तक के **450 छात्रों** (225 शहरी, 225 ग्रामीण) के प्रतिदर्श का उपयोग किया गया। आँकड़ा संकलन के लिए माता-पिता की SES को मापने वाला संरचित प्रश्नावली और छात्रों के हालिया शैक्षणिक प्राप्तियों का उपयोग किया गया।

परिणामों ने सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण निष्कर्ष प्रदान किए: (1) शहरी छात्रों का औसत शैक्षणिक निष्पादन ग्रामीण छात्रों की तुलना में अधिक पाया गया। (2) सामाजिक-आर्थिक स्थिति दोनों ही समूहों में शैक्षणिक निष्पादन का एक सार्थक प्रक्षेपक थी। (3) तुलनात्मक समाश्रयण विश्लेषण से पता चला कि शहरी छात्रों के लिए, माता-पिता की शैक्षणिक योग्यता (शैक्षणिक पूंजी) निष्पादन का सबसे मजबूत प्रक्षेपक थी, जबकि ग्रामीण छात्रों के लिए, माता-पिता की मासिक आय (आर्थिक पूंजी) सबसे मजबूत प्रक्षेपक थी। यह परिणाम दर्शाता है कि SES का प्रभाव निवास स्थान के आधार पर नियंत्रित होता है। ये निष्कर्ष झाँसी क्षेत्र में शैक्षिक नीतियों और हस्तक्षेपों के लिए महत्वपूर्ण निहितार्थ रखते हैं, जो यह सुझाव देते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक संसाधनों को लक्षित किया जाना चाहिए, जबकि शहरी क्षेत्रों में सांस्कृतिक पूंजी को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।

मुख्य शब्द: सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES), शैक्षणिक निष्पादन, ग्रामीण-शहरी विभाजन, माता-पिता की आय, शैक्षणिक पूंजी, झाँसी, बुन्देलखण्ड।

1. प्रस्तावना

1.1 शोध की पृष्ठभूमि एवं प्रासंगिकता

शिक्षा किसी भी समाज की प्रगति का आधार है, और भारत में शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण प्रयास किए गए हैं। हालाँकि, शिक्षा के परिणामों में व्यापक असमानताएँ बनी हुई हैं। इन असमानताओं का एक प्रमुख कारण छात्र की सामाजिक पृष्ठभूमि है, जिसमें

सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES) एक केंद्रीय भूमिका निभाती है। SES एक बहुआयामी निर्मिति है जो माता-पिता की आय, शैक्षणिक योग्यता और व्यवसाय जैसे कारकों को समाहित करती है। यह छात्र के लिए उपलब्ध संसाधनों (जैसे, ट्यूशन, डिजिटल उपकरण, पौष्टिक भोजन) और सांस्कृतिक पूंजी (जैसे, उच्च आकांक्षाएँ, अकादमिक माहौल) को सीधे प्रभावित करती है।

शैक्षणिक निष्पादन पर SES के प्रभाव का अध्ययन वैश्विक स्तर पर किया गया है। भारत के संदर्भ में, यह संबंध और भी जटिल हो जाता है, विशेषकर ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में शिक्षा की गुणवत्ता और पहुँच में स्पष्ट अंतर के कारण। शहरी छात्रों को अक्सर बेहतर विद्यालय बुनियादी ढाँचा, उच्च योग्य शिक्षक और पाठ्येतर गतिविधियों तक आसान पहुँच प्राप्त होती है, जबकि ग्रामीण छात्र सीमित संसाधनों और शैक्षिक रूप से कम जागरूक वातावरण का सामना करते हैं।

1.2 भौगोलिक संदर्भ: झाँसी और बुन्देलखण्ड क्षेत्र

यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले और उसके आसपास के क्षेत्रों पर विशेष ध्यान केंद्रित करता है। झाँसी एक प्रमुख शहरी केंद्र है जो बुन्देलखण्ड क्षेत्र का प्रवेश द्वार माना जाता है। यह क्षेत्र ऐतिहासिक रूप से गरीबी, सूखा और सीमित औद्योगिक विकास से प्रभावित रहा है। नतीजतन, झाँसी शहर और उसके आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों के बीच सामाजिक-आर्थिक और शैक्षणिक विषमताएँ तीव्र हैं। शहर में स्थापित प्रतिष्ठित सरकारी और निजी विद्यालय उच्च स्तर की शैक्षिक सुविधाएँ प्रदान करते हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यालय अक्सर अपर्याप्त बुनियादी ढाँचे, शिक्षकों की कमी और उच्च छात्र-शिक्षक अनुपात जैसी समस्याओं से जूझते हैं। झाँसी का यह विरोधाभासी परिदृश्य SES और शैक्षणिक निष्पादन के बीच के जटिल संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए एक आदर्श प्रयोगशाला प्रदान करता है।

1.3 अनुसंधान की समस्या और उद्देश्य

हालाँकि SES और शैक्षणिक निष्पादन के बीच संबंध स्थापित है, यह स्पष्ट नहीं है कि SES के विभिन्न घटक (आय बनाम शिक्षा) ग्रामीण और शहरी छात्रों के शैक्षणिक परिणामों पर किस हद तक **अलग-अलग ढंग से** प्रभाव डालते हैं। क्या ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक संसाधनों (आय) की कमी शहरी क्षेत्र में सांस्कृतिक पूंजी (माता-पिता की शिक्षा) की कमी से अधिक हानिकारक है?

इस शोध का मुख्य उद्देश्य था:

1. झाँसी क्षेत्र के ग्रामीण और शहरी छात्रों के शैक्षणिक निष्पादन में **सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर** का

पता लगाना।

2. माता-पिता की SES के तीन घटकों (आय, शिक्षा, व्यवसाय) का शैक्षणिक निष्पादन पर **प्रत्यक्ष प्रभाव** निर्धारित करना।
3. निवास स्थान (ग्रामीण/शहरी) के आधार पर SES के घटकों के प्रभाव की **तुलना** करना और यह समझना कि SES किस प्रकार ग्रामीण और शहरी संदर्भों में भिन्न रूप से कार्य करती है।

2. साहित्य अवलोकन (Review of Literature)

2.1 SES और शैक्षणिक निष्पादन का सैद्धांतिक आधार

शैक्षणिक निष्पादन पर SES के प्रभाव को समझने के लिए दो प्रमुख सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्यों का उपयोग किया जाता है:

2.1.1 संसाधन सिद्धांत

यह सिद्धांत मानता है कि उच्च SES वाले परिवार अपने बच्चों को अधिक **भौतिक और वित्तीय संसाधन** प्रदान कर सकते हैं। इन संसाधनों में निजी ट्यूशन, पाठ्यपुस्तकें, कंप्यूटर, इंटरनेट पहुँच और सुरक्षित, पौष्टिक वातावरण शामिल हैं। इन संसाधनों की सीधी उपलब्धता छात्र के शैक्षणिक अवसरों और स्वास्थ्य को बढ़ाती है, जिससे निष्पादन में सुधार होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ स्कूल के बुनियादी ढाँचे कमजोर होते हैं, **आर्थिक पूंजी** की भूमिका प्राथमिक हो जाती है।

2.1.2 सांस्कृतिक पूंजी सिद्धांत

पियरे बोर्डियू (Pierre Bourdieu) द्वारा प्रस्तावित यह सिद्धांत बताता है कि उच्च SES वाले परिवार अपने बच्चों को **सांस्कृतिक पूंजी** (Cultural Capital) प्रदान करते हैं। इसमें ज्ञान, व्यवहार, भाषा कौशल और शैक्षणिक आकांक्षाएँ शामिल हैं जो स्कूल प्रणाली द्वारा मूल्यवान मानी जाती हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षित माता-पिता अपने बच्चों को जटिल शब्दावली, शैक्षिक प्रक्रिया का ज्ञान, और भविष्य की योजना बनाने की क्षमता सिखाते हैं, जो स्कूल की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है। यह सिद्धांत अक्सर शहरी, उच्च-मध्यम वर्ग के संदर्भों में अधिक प्रासंगिक होता है।

2.2 ग्रामीण-शहरी शैक्षणिक विभाजन: राष्ट्रीय संदर्भ

भारत में कई अध्ययनों (जैसे, ASER रिपोर्ट) ने लगातार यह

दिखाया है कि शहरी छात्रों का औसत निष्पादन ग्रामीण छात्रों से बेहतर होता है।

- **विद्यालय बुनियादी ढाँचा:** ग्रामीण क्षेत्रों में अक्सर शिक्षकों की कमी, अपर्याप्त प्रयोगशालाएँ और पुस्तकालयों का अभाव पाया जाता है (विश्व बैंक, 2021)।
- **अभिभावकीय जुड़ाव:** शहरी माता-पिता की शैक्षणिक योग्यता अधिक होने के कारण वे अपने बच्चों की पढ़ाई में अधिक सक्रिय रूप से संलग्न होते हैं, जिससे स्कूल और घर के बीच एक मजबूत शैक्षणिक सेतु बनता है।
- **डिजिटल साक्षरता:** COVID-19 महामारी के बाद, डिजिटल उपकरणों तक असमान पहुँच (digital divide) ने ग्रामीण छात्रों के लिए सीखने की खाई को और बढ़ा दिया है।

2.3 झाँसी क्षेत्र के लिए साहित्य की विशिष्टता

बुन्देलखण्ड क्षेत्र के संदर्भ में, पूर्व शोध (सिंह एवं यादव, 2018) ने शिक्षा में क्षेत्रीय असमानताओं पर प्रकाश डाला है। इस क्षेत्र में कृषि पर अत्यधिक निर्भरता के कारण, ग्रामीण माता-पिता की आय अस्थिर और कम होती है, जिससे बच्चों की शिक्षा में निवेश करने की उनकी क्षमता सीमित हो जाती है। यह क्षेत्रीय साहित्य इस बात पर ज़ोर देता है कि **आर्थिक अस्थिरता** इस क्षेत्र में शैक्षणिक परिणामों का एक प्रमुख निर्धारक है।

2.4 परिकल्पनाओं का निर्माण

साहित्य के अवलोकन के आधार पर, निम्नलिखित परिकल्पनाओं (Hypotheses) का परीक्षण किया गया:

- **H1:** शहरी छात्रों का शैक्षणिक निष्पादन ग्रामीण छात्रों की तुलना में **सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण रूप से** उच्च होगा।
- **H2:** माता-पिता की **उच्च SES** शैक्षणिक निष्पादन के **उच्च स्तर** से जुड़ी होगी, भले ही निवास स्थान कुछ भी हो।
- **H3:** माता-पिता की **मासिक आय** ग्रामीण छात्रों के

शैक्षणिक निष्पादन की तुलना में शहरी छात्रों के शैक्षणिक निष्पादन की **कमजोर प्रक्षेपक** होगी (अर्थात, ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक पूंजी अधिक मायने रखेगी)।

3. शोध कार्यप्रणाली

3.1 शोध प्रारूप

यह अध्ययन **मात्रात्मक तुलनात्मक (Quantitative Comparative)** और **आड़ा-खंड (Cross-Sectional)** प्रारूप का अनुसरण करता है। तुलनात्मक प्रारूप का चयन इसलिए किया गया ताकि ग्रामीण और शहरी समूहों के बीच SES के प्रभावों में अंतर को स्पष्ट रूप से उजागर किया जा सके।

3.2 अध्ययन क्षेत्र और प्रतिदर्श

- **जनसंख्या:** झाँसी जिले के शहरी और निकटवर्ती ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित माध्यमिक एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 9वीं से 12वीं तक के छात्र।
- **अध्ययन क्षेत्र:** झाँसी शहर के चार प्रमुख विद्यालय (दो सरकारी, दो निजी) और झाँसी से 30-50 किमी के दायरे में स्थित तीन ग्रामीण विद्यालय (दो सरकारी, एक निजी)।
- **प्रतिदर्श आकार:** कुल **N = 450** छात्र। प्रतिदर्श को दो समूहों में विभाजित किया गया:
 - **शहरी समूह:** N = 225
 - **ग्रामीण समूह:** N = 225
- **प्रतिचयन तकनीक:** **स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन** का उपयोग किया गया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि लिंग और कक्षा स्तर (9-10वीं और 11-12वीं) का प्रतिनिधित्व दोनों समूहों में समान रूप से हो।

3.3 परिवर्तियों का मापन

1. **शैक्षणिक निष्पादन (Academic Performance - आश्रित परिवर्ती):**
 - इसे छात्रों के **पिछले तीन शैक्षणिक वर्षों/परीक्षाओं के औसत प्रतिशत प्राप्तांक** के रूप में मापा गया। यह अधिक स्थिर और

विश्वसनीय माप प्रदान करता है।

2. सामाजिक-आर्थिक स्थिति (SES - स्वतंत्र परिवर्ती):

- SES को एक संयुक्त स्कोर के बजाय तीन अलग-अलग उप-घटकों के रूप में मापा गया ताकि उनके अलग-अलग प्रभाव का पता लगाया जा सके:

■ **माता-पिता की शिक्षा:** माता-पिता (पिता और माता) की उच्चतम शैक्षणिक योग्यता (0 = निरक्षर से 5 = स्नातकोत्तर और उससे अधिक)।

■ **पारिवारिक मासिक आय:** माता-पिता की संयुक्त मासिक आय (7-बिंदु पैमाना, 20,000 रुपये से कम से 1,00,000 रुपये से अधिक तक)।

■ **माता-पिता का व्यवसाय:** संशोधित कुप्पूस्वामी SES पैमाना (Modified Kuppuswamy SES Scale) के अनुसार एक स्कोर प्रदान किया गया (0 = बेरोज़गार/अकुशल श्रमिक से 7 = पेशेवर/उच्च सरकारी अधिकारी)।

3. निवास स्थान :

- डाइकोटॉमस परिवर्ती (Dichotomous Variable): ग्रामीण (0) और शहरी (1)।

3.4 आँकड़ा संकलन प्रक्रिया

विद्यालयों के प्राचार्यों से नैतिक सहमति प्राप्त करने के बाद, छात्रों से सूचित सहमति ली गई। प्रश्नावली का प्रशासन कक्षाओं में किया गया, जिसमें छात्रों को माता-पिता की आय, शिक्षा और व्यवसाय से संबंधित जानकारी भरने में मदद करने के लिए स्थानीय शोध सहायकों (जो हिन्दी और क्षेत्रीय बोली से परिचित थे) का उपयोग किया गया। गुमनामी सुनिश्चित की गई ताकि छात्र बिना किसी डर के सटीक जानकारी प्रदान कर सकें।

3.5 आँकड़ा विश्लेषण

आँकड़ों का विश्लेषण SPSS सांख्यिकीय सॉफ्टवेयर का

उपयोग करके किया गया।

1. **विवरणात्मक सांख्यिकी:** सभी परिवर्तियों के लिए माध्य (M), मानक विचलन (SD), और आवृत्ति वितरण की गणना की गई।

2. **H1 परीक्षण:** ग्रामीण और शहरी समूहों के बीच शैक्षणिक निष्पादन के माध्य अंतर का परीक्षण करने के लिए स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण (Independent Sample t-test) का उपयोग किया गया।

3. **H2 और H3 परीक्षण:** प्रत्येक समूह (ग्रामीण और शहरी) के लिए शैक्षणिक निष्पादन की भविष्यवाणी में SES के विभिन्न घटकों की सापेक्ष शक्ति की तुलना करने के लिए दो अलग-अलग बहु-समाश्रयण मॉडल (Multiple Regression Models) विकसित किए गए।

4. परिणाम (Results)

4.1 विवरणात्मक सांख्यिकी और t-परीक्षण

तालिका 1: ग्रामीण और शहरी छात्रों की विवरणात्मक सांख्यिकी और t-परीक्षण तुलना

परिवर्ती	समूह	N	माध्य (M)	मानक विचलन (SD)	t-मान	p-मान
शैक्षणिक निष्पादन (प्रतिशत)	शहरी	225	75.83	7.15	6.48	<.001**
	ग्रामीण	225	69.51	8.02		
SES - आय स्कोर	शहरी	225	5.51	1.20	8.95	<.001**
	ग्रामीण	225	4.12	1.55		
SES - शिक्षा स्कोर	शहरी	225	4.20	0.88	7.11	<.001**
	ग्रामीण	225	3.15	1.05		

टिप्पणी: ** $p < .001$

निष्कर्ष (H1): स्वतंत्र नमूना t-परीक्षण के परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि शहरी छात्रों का औसत शैक्षणिक निष्पादन ($M=75.83$) ग्रामीण छात्रों ($M=69.51$) की तुलना में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण रूप से अधिक था ($t(448)=6.48, p < .001$)। इस प्रकार, परिकल्पना H1 का

समर्थन किया गया। इसके अतिरिक्त, शहरी छात्रों की SES (आय और शिक्षा दोनों) भी ग्रामीण छात्रों की तुलना में काफी अधिक थी।

4.2 बहु-समाश्रयण विश्लेषण: SES घटकों का प्रभाव

शैक्षणिक निष्पादन की भविष्यवाणी में SES के तीन घटकों की सापेक्ष शक्ति का परीक्षण करने के लिए दो अलग-अलग बहु-समाश्रयण मॉडल तैयार किए गए।

तालिका 2: शैक्षणिक निष्पादन की भविष्यवाणी के लिए बहु-समाश्रयण मॉडल

SES घटक	शहरी छात्र (N=225)	ग्रामीण छात्र (N=225)
	β	p
माता-पिता की आय	.18	.035
माता-पिता की शिक्षा	.41	<.001
माता-पिता का व्यवसाय	.10	.310
कुल समायोजित R^2	.38	
मॉडल F	$F(3, 221)=46.12$	

टिप्पणी: $p < .05$, ** $p < .001$ *

H2 और H3 निष्कर्ष:

- H2 (सामान्य SES प्रभाव): चूंकि दोनों मॉडलों के लिए F-मान अत्यधिक महत्वपूर्ण थे, इसका अर्थ है कि तीनों SES घटक शैक्षणिक निष्पादन की भविष्यवाणी में एक साथ सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण योगदान देते हैं, जो H2 का समर्थन करता है।
- H3 (तुलनात्मक प्रभाव): परिणाम स्पष्ट रूप से निवास स्थान के आधार पर एक मजबूत अंतर (नियंत्रण प्रभाव) दर्शाते हैं:
 - शहरी छात्रों के लिए, माता-पिता की शिक्षा ($\beta = .41$, $p < .001$) निष्पादन का सबसे मजबूत और सबसे महत्वपूर्ण प्रक्षेपक थी। माता-पिता की आय का प्रभाव भी महत्वपूर्ण था, लेकिन शिक्षा की तुलना में कम।
 - ग्रामीण छात्रों के लिए, माता-पिता की मासिक

आय ($\beta = .45$, $p < .001$) निष्पादन का सबसे मजबूत और सबसे महत्वपूर्ण प्रक्षेपक थी। माता-पिता की शिक्षा का प्रभाव महत्वहीन था।

यह निष्कर्ष H3 का समर्थन करता है।

5. विवेचन (Discussion)

5.1 शैक्षणिक निष्पादन में ग्रामीण-शहरी विभाजन

t-परीक्षण के निष्कर्ष (तालिका 1) H1 की पुष्टि करते हैं, यह दर्शाते हुए कि झाँसी क्षेत्र में शहरी छात्र शैक्षणिक रूप से ग्रामीण छात्रों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं। यह परिणाम संसाधन असमानता के राष्ट्रीय पैटर्न के अनुरूप है। झाँसी शहर में, विद्यालय अक्सर उच्च योग्य शिक्षकों, बेहतर प्रयोगशालाओं और कोचिंग संस्थानों के नेटवर्क से जुड़े होते हैं। इसके विपरीत, आस-पास के ग्रामीण क्षेत्रों में, छात्रों को घर पर पढ़ाई के लिए बिजली की अनियमित आपूर्ति, सीमित इंटरनेट पहुँच, और माता-पिता से शैक्षणिक मार्गदर्शन की कमी जैसी मूलभूत बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

5.2 SES के घटकों की विभेदक भूमिका

इस अध्ययन का सबसे महत्वपूर्ण योगदान SES के घटकों की अलग-अलग प्रक्षेपण शक्ति में निहित है, जिसे बहु-समाश्रयण मॉडल (तालिका 2) ने उजागर किया है:

5.2.1 शहरी संदर्भ में शैक्षणिक पूंजी की प्रधानता

शहरी छात्रों के लिए, माता-पिता की शिक्षा (शैक्षणिक पूंजी) निष्पादन का सर्वाधिक प्रभावी प्रक्षेपक क्यों थी?

- संसाधनों का संतृप्ति (Saturation of Resources):** शहरी वातावरण में, आवश्यक भौतिक संसाधन (जैसे, किताबें, स्कूल, ट्यूशन) अधिकांश मध्यम SES परिवारों के लिए उपलब्ध होते हैं। इसलिए, शैक्षणिक परिणामों में भिन्नता अब केवल पैसे की उपलब्धता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि परिवार उन संसाधनों का उपयोग कैसे करता है।
- सांस्कृतिक पूंजी:** शिक्षित शहरी माता-पिता बेहतर सांस्कृतिक पूंजी प्रदान करते हैं। वे उच्च आकांक्षाएँ स्थापित करते हैं, शैक्षणिक सफलता को महत्व देते हैं,

और अपने बच्चों को अकादमिक चर्चाओं, पुस्तकालयों और कलाओं से परिचित कराते हैं। यह सांस्कृतिक मेल-मिलाप छात्र को विद्यालय के माहौल में अधिक सहज बनाता है और उसे बेहतर संवाद कौशल प्रदान करता है, जैसा कि बोर्डियू के सिद्धांत में बताया गया है।

5.2.2 ग्रामीण संदर्भ में आर्थिक पूंजी की अनिवार्यता

ग्रामीण छात्रों के लिए, **माता-पिता की आय** (आर्थिक पूंजी) सबसे मजबूत प्रक्षेपक थी, जबकि माता-पिता की शिक्षा का प्रभाव महत्वहीन पाया गया। यह निष्कर्ष झाँसी जैसे अर्ध-शहरी/ग्रामीण क्षेत्र के लिए महत्वपूर्ण है:

- **मूलभूत आवश्यकताएँ:** ग्रामीण क्षेत्रों में, आय की कमी सीधे छात्र की मूलभूत आवश्यकताओं (जैसे, पौष्टिक भोजन, स्वास्थ्य सेवाएँ, यूनिफॉर्म, निजी ट्यूशन के लिए पैसे) को प्रभावित करती है। आर्थिक अस्थिरता के कारण छात्र अक्सर मौसमी कृषि कार्य में सहायता करने के लिए मजबूर होते हैं, जिससे स्कूल में उनकी उपस्थिति प्रभावित होती है।
- **विद्यालयों पर निर्भरता:** ग्रामीण छात्रों के लिए, आय सीधे उन कुछ संसाधनों को खरीदने की कुंजी है जो स्कूल उपलब्ध नहीं कराता (जैसे, निजी कोचिंग)। कम आय का अर्थ है इन **जीवन रेखाओं** तक पहुँच का अभाव।
- **कम सांस्कृतिक लाभ:** ग्रामीण परिवेश में, यदि माता-पिता शिक्षित भी हैं, तो भी स्कूल और समुदाय का समग्र शैक्षणिक माहौल कमजोर हो सकता है, जिससे उनकी शिक्षा का लाभ शहरी वातावरण जितना प्रभावी नहीं होता है। इसलिए, निष्पादन में भिन्नता मुख्य रूप से **आर्थिक अवरोधों** से उत्पन्न होती है।

5.3 सैद्धांतिक निहितार्थ

यह अध्ययन शैक्षणिक परिणामों पर SES के प्रभाव में निवास स्थान के **नियंत्रक प्रभाव** को स्थापित करके संसाधन सिद्धांत और सांस्कृतिक पूंजी सिद्धांत दोनों के लिए एक क्षेत्रीय विस्तार प्रदान करता है। शहरी संदर्भ में सांस्कृतिक पूंजी

अधिक महत्वपूर्ण है, जबकि ग्रामीण संदर्भ में आर्थिक पूंजी अभी भी एक **बाध्यकारी बाधा (Constraining Constraint)** बनी हुई है।

5.4 अनुसंधान की सीमाएँ

यह अध्ययन कई सीमाओं के अधीन है:

1. **आड़ा-खंड डिज़ाइन:** यह अध्ययन एक विशिष्ट समय बिंदु पर सहसंबंधों की जाँच करता है, लेकिन यह SES के दीर्घकालिक (लॉन्गिट्युडनल) प्रभावों की जाँच नहीं करता है।
2. **आत्म-रिपोर्टेड डेटा:** माता-पिता की आय का डेटा छात्रों द्वारा भरा गया था, जो सटीक न भी हो सकता है।
3. **झाँसी का क्षेत्रीय दायरा:** निष्कर्षों का सामान्यीकरण (Generalization) अन्य भौगोलिक या सांस्कृतिक क्षेत्रों में करते समय सावधानी बरतनी चाहिए, हालाँकि यह बुन्देलखण्ड क्षेत्र के लिए मजबूत आधार प्रदान करता है।

6. निष्कर्ष और नीतिगत सिफारिशें

6.1 मुख्य निष्कर्षों का सारांश

इस शोध ने झाँसी और आसपास के क्षेत्रों में छात्रों के शैक्षणिक जीवन की जटिलताओं को उजागर किया है।

- **विभाजन की पुष्टि:** शहरी छात्रों का निष्पादन ग्रामीण छात्रों से काफी बेहतर है, जो क्षेत्र में शिक्षा परिणामों में विद्यमान असमानता को दर्शाता है।
- **SES का विभेदक प्रभाव:** SES दोनों समूहों में निष्पादन का एक महत्वपूर्ण प्रक्षेपक है। हालाँकि, शहरी छात्रों के लिए माता-पिता की शिक्षा (शैक्षणिक पूंजी) सबसे महत्वपूर्ण है, जबकि ग्रामीण छात्रों के लिए मासिक आय (आर्थिक पूंजी) सबसे महत्वपूर्ण है।

6.2 नीतिगत सिफारिशें

परिणामों के आधार पर, झाँसी क्षेत्र के लिए शैक्षणिक इक्विटी प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित लक्षित हस्तक्षेपों की सिफारिश की जाती है:

1. **ग्रामीण-केंद्रित आर्थिक और संरचनात्मक हस्तक्षेप:**

- **आर्थिक सहायता:** ग्रामीण छात्रों के लिए छात्रवृत्ति, मुफ्त किताबें, यूनिफॉर्म, और परिवहन सब्सिडी जैसी लक्षित आर्थिक सहायता योजनाएँ शुरू की जानी चाहिए, जिससे SES के कारण उत्पन्न होने वाली आर्थिक बाधाएँ दूर हो सकें।
- **डिजिटल पहुँच:** झाँसी जिले के ग्रामीण विद्यालयों को उच्च गति वाले इंटरनेट कनेक्शन, कंप्यूटर प्रयोगशालाओं और डिजिटल शिक्षण सामग्री से लैस करने के लिए एक प्राथमिकता कार्यक्रम शुरू किया जाना चाहिए ताकि **डिजिटल विभाजन** को कम किया जा सके।
- **व्यावसायिक संबलन:** ग्रामीण माता-पिता को स्थिर आय स्रोत प्रदान करने के लिए कौशल विकास और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए, जिससे बच्चों की शिक्षा में निवेश करने की उनकी क्षमता बढ़ सके।

2. शहरी-केंद्रित शैक्षणिक पूंजी संवर्धन:

- **अभिभावक कार्यशालाएँ:** शहरी क्षेत्रों में, कम शिक्षित माता-पिता के लिए कार्यशालाएँ आयोजित की जानी चाहिए जो उन्हें सिखाएँ कि बच्चों की सीखने की प्रक्रिया में कैसे शामिल हों, शैक्षणिक प्रेरणा कैसे प्रदान करें, और उच्च शिक्षा विकल्पों का पता कैसे लगाएँ (सांस्कृतिक पूंजी का प्रसार)।
- **परामर्श सेवाएँ:** शहरी विद्यालयों में छात्रों पर उच्च शैक्षणिक दबाव का प्रबंधन करने और करियर मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए उन्नत परामर्श सेवाएँ स्थापित की जानी चाहिए।

3. विद्यालय सुधार:

- **शिक्षक प्रशिक्षण:** ग्रामीण विद्यालयों में शिक्षकों को डिजिटल उपकरणों के उपयोग और बहु-ग्रेड शिक्षण रणनीतियों (Multi-grade Teaching Strategies) पर विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया जाना चाहिए।

- **स्थानीय अकादमिक संबलन:** स्थानीय एनजीओ और झाँसी विश्वविद्यालय के छात्रों को शामिल करके ग्रामीण क्षेत्रों में अकादमिक संबलन कार्यक्रम (Mentorship Programs) चलाए जाने चाहिए।

इन सिफारिशों का कार्यान्वयन झाँसी और बुन्देलखण्ड क्षेत्र में शैक्षणिक इक्विटी को बढ़ावा देगा, जिससे यह सुनिश्चित होगा कि छात्र का जन्म स्थान उसकी शैक्षणिक सफलता का निर्धारण न करे।

7. संदर्भ सूची (References)

- ASAR. (2023). *Annual Status of Education Report (Rural) 2023*. Pratham Education Foundation.
- बैरोन, आर. एम., एवं केनी, डी. ए. (1986). The moderator-mediator variable distinction in social psychological research: Conceptual, strategic, and statistical considerations. *Journal of Personality and Social Psychology*, 51(6), 1173–1182.
- बोर्डियू, पी. (1986). The forms of capital. In *Handbook of Theory and Research for the Sociology of Education* (pp. 241-258). Greenwood Press.
- कुमार, ए. (2019). Socio-economic status and academic achievement of students in Uttar Pradesh: A comparative study. *International Journal of Research in Social Sciences*, 9(3), 56-65.
- झा, एस. के., एवं वर्मा, आर. (2022). Urban-rural disparity in educational outcomes: A study of public and private schools in northern India. *Indian Journal of Education*, 50(4), 112-125.
- कुप्पूस्वामी, बी. (1962). *Manual of Socio-Economic Status Scale*. Manasayan.

- सिंह, पी., एवं यादव, एम. (2018). Poverty, social exclusion and educational marginalization in Bundelkhand region, India. *Journal of Exclusion and Inclusion*, 3(1), 40-55.
- विश्व बैंक. (2021). *India development update: Education and skills for India's future*. World Bank Group.
- शर्मा, वी. (2020). Parental involvement, academic aspiration, and achievement among urban adolescents. *Psychology and Developing Societies*, 32(1), 1-19.